उम्मीद का दीपक जलाए रखिये।

उम्मीद का दीपक जलाए रखिये।
ज़िन्दगी तबस्सुम से सजाए रखिये।।

आतीं हैं आंधियां तो कोई ग़म नहीं।
परचम फिर अपना लहराए रखिये।।

आकर वापस हो जाएंगी खुद बखुद।
आप तो धैर्य अपना बनाए रखिये।।

कहां जोरेबाजू है इनके अन्दर इतना।
बस अपनी नज़र जरा टिकाए रखिये।।

रफ़्तार आपकी कम न होने पाए।
कुछ ऐसी फितरत अपनी बनाए रखिये।।

फिर कदम चूमेगी सफलता आपके।
आप तो कदम से कदम मिलाए रखिये।

कानपुर

प्रीती श्रीवास्तव

लिखी तहरीर दिल पर जो बदल जाना ही बहतर है ।

लिखी तहरीर दिल पर जो बदल जाना ही बहतर है ।
करें बदनाम जो खत उनका जल जाना ही बहतर है।।

जिसे महफूज कर रक्खा ज़माने से बचाकर यूं।
समय रहते मुहब्बत का मचल जाना ही बहतर है।।

कोई तस्वीर जो तुमने छुपाई हो किताबों में।
उसे रखने के खातिर अब सँभल जाना ही बहतर है।।

तुझे पाने के खातिर यार जो हद से गुजर जाए।
मुहब्बत के लिए तेरा पिघल जाना ही बहतर है।।

हंसीं सूरत में मिल जाए क़जा जो रूबरू तुझको।
अदा से उसकी बचकर खुद निकल जाना ही बहतर है।

ISSN:2583-8849